वर्षः ०१/ संस्करणः ०९/ पृष्टः ०८/ मूल्यः ५ रूपये

भिवानी, मंगलवार १० सितम्बर २०२४

anupama.express@ammb.ac.in

स्वयं को जानने और समझने से ही निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है: प्रो. दीप्ति धर्माणी

नए भारत के निर्माण व उन्नति में महिलाओं की भूमिका अग्रणी रही हैं। आज हमारे पास शिक्षा के अवसर अधिक हैं इसका मतलब शिक्षा पा कर नौकरी ही जीवन का लक्ष्य बना ले तो उपयुक्त नहीं हैं। बल्कि स्वयं को जानने और समझने से ही निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर जीवन में आगे बढने की आवश्यकता है। ये बात आज चौ. बंसी लाल विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो0 दीप्ति धर्माणी ने कही। प्रो0 धर्माणी स्थानीय आदर्श महिला महाविद्यालय में एलुमनाई छात्रा नेहा भगासरा के सम्मान में आयोजित समारोह में संबोधित रही थी। उन्होंने कहा कि अपने आप को किसी भी सीमा में न बांधे। आजाद भारत में आज महिला अपनी शक्ति को पहचान कर निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में पुरुषो को पीछे छोड़ रही हैं। उन्होने आज़ादी की पूर्व संध्या पर शहीदों को नमन किया और यह भी कहा कि नारी स्वयं शक्ति स्वरूप है। वह न केवल स्वयं का मार्ग



प्रशस्त करती है, अपित् औरों को भी सही मार्ग दिखाने का कार्य करती है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता ,आदर्श महिला महाविद्यालय के अध्यक्ष, अजय गुप्ता ने की। विशिष्ट अतिथि सुरेश गुप्ता ने छात्राओं से कहा कि आप हमारे भारत देश का उज्जवल भविष्य हैं। आप सभी रोजगार लेने वाली नहीं बल्कि देने वाली बने। जिसके लिए उन्होंने महाविद्यालय में छात्राओ के लिए सिलाई केंद्र खोलने का बीड़ा उठाया और विश्वास दिलाया की वह पूर्णरूप से उन्हें कौशल उन्मुख शिक्षा देकर रोजगार प्रदान करेंगें। अजय गुप्ता ने कहा कि छात्राएं अपने मन की इछा शक्ति को

कर निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण आत्मविश्वास से प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट ,अध्यक्ष, शिवरतन गुप्ता ने कहा कि किसी भी शिक्षण संस्थान का उद्देश्य विद्यार्थी को उसके लक्षित मुकाम तक पहुचाना हैं और कार्यक्रमों के माध्यम से अभिप्रेरित कर उनका मार्ग प्रशस्त करना हैं उसके लिए ये संस्थान कर्तव्य निर्वहन कर रही है। प्रंबध समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने कुलपित से दाखिलें की सीटें बढाने व छात्राओं के लिए मौलिक सुविधाएं प्रदान करने कि अपील की। महाविद्यालय प्राचार्या

मित्तल ने अतिथि गण का धन्यवाद करते कार्यक्रम संयोजिका डॉ अपर्णा बत्रा सह

एलुमनाई नेहा आईआरएस को किया सम्मानित

कार्यक्रम में महाविद्यालय की एलुमनाई छात्रा नेहा भगासरा ने संघ लोक सेवा आयोग 2023 की परीक्षा प्रथम प्रयास में 719 वां रैंक हासिल किया। वह अपने बैच की 21 वर्ष की सबसे युवा IRS ऑफिसर बनी। एलुमनाई नेहा ने



छात्राओं को संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में आने वाली परेशानी के लिए मार्ग प्रशस्त करते हुए सफलता के कुछ मूल मंत्र दियें। उन्होंने कहा की सही समय पर विषय का चुनाव आवश्यक हैं। लेखन कला को समय रहते सुधारें । साक्षात्कार के सिद्धांत, समय प्रबंधन ज्ञान अर्जित करने की कला, पाठन सामग्री आदि के बारे में विशेष तौर पर बताया। उन्होने छात्राओं की जिज्ञासा को बड़े ही प्रभावी ढंग से शांत किया।

नेंहा से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित किया मंच संचालन बड़े ही सजीव ढंग से डॉ. लाल अग्रवाल, सह सचिव पवन नृत्य, संस्कृत गीत, योगा प्रस्तुति केडिया, पवन बुवानीवाला, सुभाष सोनी श्रोतागण को मंत्र मुग्ध कर दिया।

हुए छात्राओं को बधाई दी और एलुमनाई संयोजिका डॉ रेनू, नेहा उपस्थित रही। । इस अवसर पर प्रबंध समिति की निशा शर्मा द्वारा किया गया। कार्यऋम में उपाध्यक्ष सुनीता गुप्ता, कोषाध्यक्ष सुंदर देशभक्ति से ओत -प्रोत कविता पाठ, नृत्य, संस्कृत गीत, योगा प्रस्तुति ने

सांस्कृतिक गतिविधियां आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व निखार में सहायकः अजय गुप्ता

शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक गतिविधियों छात्राओं की भागीदारी आत्मविश्वास को बढ़ाती हैं। इस प्रकार की गतिविधियों से उनके व्यक्तित्व एवं भाषा कौशल का विकास होता हैं। यह उद्गार



मुख्य अतिथि महाविद्यालय प्रबंधक समिति अध्यक्ष अजय गुप्ता ने कहे। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार के मंच के माध्यम से छात्राएं अपनी छिपी प्रतिभा को प्रदर्शित करने में सहायक होती हैं। कार्यऋम की विधिवत शुरुआत माँ शारदे के चरणों में दीप प्रज्ज्वलन व गणेश वंदना

वर्ष की छात्रा काजल ने दी। कार्यक्रम में आदर्श महिला महाविद्यालय में प्रथम वर्ष विशेष अतिथि अजय गुप्ता की बेटी की छात्राओं के लिए आयोजित 'प्रतिभा आकृति रही व कार्यक्रम की अध्यक्षता खोज' कार्यक्रम 'फैगरेंसिज' में बतौर प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने की। प्रथम वर्ष को छात्राओं ने नृत्य-गायन व मोनो एक्टिंग की प्रस्तुति के माध्यम से सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में बतौर निर्णायक मण्डल में डॉ. इंदु शर्मा, डॉ. वन्दना वत्स व डॉ. सविता गौड रही। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधक समिति कोषाध्यक्ष सुंदरलाल अग्रवाल के साथ हुई। जिसकी प्रस्तृति बी.ए द्वितीय उपस्थित रहे। कार्यक्रम संयोजिका डॉ.

कार्यक्रम का परिणाम इस प्रकार रहा

नृत्य में रिदम ने प्रथम स्थान, तन् ने द्वितीय स्थान, रौनक ने तृतीय स्थान, गीत गायन में रवीना ने प्रथम स्थान, रीतु ने द्वितीय स्थान, कविता पाठ में प्रीति ने प्रथम स्थान, रवीना ने द्वितीय स्थान, नन्दिनी ने तृतीय स्थान, मोनो ऐक्टिंग में मानी ने प्रथम स्थान, रगोली में मुस्कान प्रथम स्थान, आशा द्वितीय स्थान, कार्ट्निंग में रिकू प्रथम स्थान, मिरर आर्ट म कमलश प्रथम स्थान, कामल द्विताय स्थान, बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट तनीषा प्रथम स्थान, रवीना द्वितीय स्थान, साक्षी तृतीय स्थान, फोटोग्रॉफी एण्ड रील मेकिंग गरिमा शर्मा प्रथम स्थान, मानी द्वितीय स्थान पर रही।

नूतन शर्मा व सह-संयोजिका डॉ. ममता

आदर्श महिला महाविद्यालय के संस्थापक बनारसी दास गुप्त की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि अर्पित की

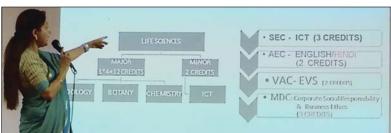


प्रबल पक्षधर महान स्वतंत्रता सेनानी, स्वर्गीय श्री बनारसी दास गुप्ता की अवसर पर उनके पुत्र ने कहा कि उनके द्वारा किए गए समाज सुधार के कार्यों में नारी शिक्षा अग्रणी रहा। उन्होंने पहले जाना ओर महिलाओं की शिक्षा के लिए आदर्श महिला महाविद्यालय रूपी पौधे को रोपित किया जो आज हरियाणा का ही नहीं अपितु देश का

सच्चे समाज सुधारक नारी शिक्षा के एक उच्च कोटि का लडिकयों का शिक्षण संस्थान है। जिससे हरियाणा भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व सांसद की हजारों बेटियां शिक्षा ज्ञान लेकर लाभान्वित हो रही है। प्रबंधक समिति पुण्यतिथि के अवसर पर उनके पुत्र महासचिव अशोक बुवानीवाला ने अजय गुप्ता, पौत्र एवं पौत्रवधु ने उनकी कहा उनके अथक प्रयत्नों की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस महाविद्यालय एक जीवंत मिसाल है। आप युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत एवं स्वतंत्र विचारधारा रखने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी है। शहर नारी शिक्षा के महत्व को कई वर्षों के गणमान्य व्यक्तियों, प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल सहित महाविद्यालय के शिक्षक एवं गैर-शिक्षक वर्ग ने उनके प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

सही समय पर सही निर्णय ही सफलता का मूल मंत्र हैं: डॉ. अलका मित्तल

आदर्श महिला महाविद्यालय में दो दिवसीय छात्र सभा का आयोजन किया गया। प्रथम दिन बी.ए प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए व दूसरे दिन बीकॉम, बी.सी.ए एवं बी.एस.सी की छात्राओं के लिए रहा। कार्यऋम में बतौर मुख्य अतिथि महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने सर्वप्रथम मां शारदे के चरणों में पुष्प अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया और कहा कि छात्राऐं बुरी संगति से दूर रहें और समय के महत्व को समझें। उन्होंने यह भी कहा कि सही समय पर सही निर्णय ही सफलता का



तौर पर साफ-सफाई के लिए प्रेरित किया, साथ ही मोबाइल के दुरुपयोग न करने के लिए भी कहा। उन्होंने छात्राओं को अनुशासन मे रहने की प्रेरणा दी, और महाविद्यालय की एलुमनाई के

मूल मंत्र हैं। उन्होंने छात्राओं को विशेष उदाहरणों के माध्यम से शैक्षणिक स्तर पर महाविद्यालय का नाम रोशन करने के लिए भी कहा। छात्र सभा को डॉ. अपर्णा बतरा ने संबोधित किया और पीपीटी के माध्यम से छात्राओं को महाविद्यालय की कार्यप्रणाली को पूर्ण

रूप से समझाते हुए कहा कि कठिन गतिविधियों से जुड़ने के लिए सिक्षत परिश्रम व बुलंद होसलों के द्वारा किसी भी काम को किया जा सकता हैं। उन्होंने छात्राओं को नई शिक्षा नीति के तहत ऋडिट के बारे में विस्तार से समझाया और छात्राओं को एन.सी.सी, एन.एस.एस, खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने यह भी बताया कि इस प्रकार की गतिविधियों में भाग लेने से आत्मविश्वास बढ़ता हैं जो कि हमारे व्यक्ति निखार में सहायक हैं। छात्राओं को सभी प्रकार की

ब्योरा भी दिया। उन्होनें छात्राओं को उचित परिधान अपनाने और अनुशासित जीवन जीने की प्ररेणा दी। कार्यऋम में मंच का संचालन डॉ. रिंकू अग्रवाल व डॉ. निशा शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा मंत्र उच्चारण की प्रस्तुति ने सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में छात्राओं को सभी प्राध्यापिकाओं से परिचित भी करवाया गया। इस महाविद्यालय की समस्त प्राध्यापिकाओं सहित गैर-शिक्षक वर्ग भी उपस्थित रहा।

अमृत काल में महिलाओं की सुरक्षा एक प्रश्न चिन्ह

आज हम आजादी के 75 वर्ष पूर्व होने पर अमृतकाल में जी रहे है। जो कि एक मिथ्या व भ्रम है हमारी आजादी के इतने वर्षों के उपरान्त हम पोर्न वायरस के कहे शिकंजे में जकड़ते जा रहे है। हमारी युवा पीढ़ी आधुनिकता की चकाचौंध में संस्कृति से विमुख होकर न केवल स्वयं का स्वनाश कर रही हैं, अपितु भ्रमित मानसिकता के दुश्चऋ में फसंकर समाज को भी नुकसान पहुचां रही है। क्या यह गलती केवल युवाओं की है? क्या तकनीकी ऋांति के प्रभाव भयावह हैं? देश के सूत्रधार व राजनैतिक हस्तक्षेप किस हद तक इस दुश्चऋ को बढ़ावा दे रहे। देश में महिलाओं की स्थिति केवल दयनीय



बनती जा रही है। क्या बंदिशे केवल आवश्यकता हैं। महिलाओं की सुरक्षा द्रोपदी पर ही होनी चाहिए? आज के पर लगा प्रश्नचिन्ह शताब्दिया व युगो दुर्योधन को बंदिशों की अति से प्रश्न बनकर रह गया है। पुरुष प्रधान

समाज में महिलाएं न केवल असुरक्षित सचेत कर रही हैं अपितु आग्राह कर महसूस कर रही है। अपित नित नए दिवस पशुता जैसी मानसिकता का शिकार बनती जा रही है।

की सुरक्षा के कानून केवल कानून बनकर रह गए हैं, आवश्यकता देश में अन्य देशो की भांति कड़े कानून बनाने की हैं जिससे इस प्रकार की ऋरता करने वालो के हाथ दस बार स्वयं कांपे। यदि हम इस प्रकार के कानून नहीं बनाते हैं तो देश की सुरक्षा पर मर मिटने वाले शहीदों की सहादत का कोई लाभ नहीं, जब हम अपने ही देश में महिलाओं की सुरक्षा नहीं कर सकते। आकड़ो की भयावता हमें न केवल

रही हैं कि वह दिन दूर नही जब तालीबानी बनकर माँ बेटी की सुरक्षा के मदद्नजर उसे घर में ही नजरबंद कर आज देश में बने महिलाओं दें और बेटी को कोख मे ही मार दे, क्यो कि इस प्रकार की विकृत मानसिकता का प्रभाव केवल यवा वर्ग पर नही अपित एक बेटी की माँ के हृदय पर भी पड़ता हैं। आज माँ बेटी होने पर उसकी शिक्षा को लेकर चिंतित नहीं हैं अपितु उसकी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं। मोदी जी का नारा बेटी-बचाओ बेटी पढाओं न होकर बेटा पढ़ाओं बेटी बचाओं होना चाहिए।

डॉ. गायत्री बंसल सहायक प्रवक्ता

Silent Nights, Shattered Lives: The Kolkata Tragedy Igniting India's Call for Women's Safety"

The recent horrific incident in Mumbai, Kolkata, where a 31-year-old trainee doctor was brutally raped and murdered, has left an indelible mark on the nation, raising pressing questions about the safety of women in our society. This tragedy occurred at RG Kar Medical College and Hospital, a place that should symbolize healing and care but has now become a site of unspeakable violence.

The victim, a promising young doctor, was found in a semi-nude state in a seminar hall after what should have been a routine night shift. The main suspect, Sanjay Roy, a civic volunteer, was allegedly intoxicated during the attack, pointing to serious lapses in the hospital's security protocols. The autopsy report revealed disturbing details, suggesting that the crime might have involved multiple assailants. This raises profound concerns about the safety of women, even in environments that are expected to be The impact of this crime secure. has resonated far beyond the confines of the hospital or even the city of Kolkata. Women across India, united by their fear, anger, and determination, have organized protests under the banner of taking place in cities like Delhi, shifts, or simply existing in public

Hyderabad, Chandigarh, are a powerful expression of the collective outrage felt by women everywhere. They are not just mourning the loss of a life; they are fighting for the right to exist safely in any space, be it a hospital, a home, or a public street.



What makes this incident even more distressing is that it touches on a much larger issue—how women, irrespective of their age, religion, or profession, continue to be vulnerable to such heinous acts of violence. The victim was not just a doctor; she was a woman who, like many others, was trying to navigate her way through a demanding career. Her death is a painful reminder that professional achievement does not shield women from gender-based violence. The nationwide protests highlight a significant shift in the discourse on women's safety. This is not just about one tragic case; it is about the pervasive fear that women carry with them every day. Whether 'Reclaim the Night." These protests, walking home at night, working late

spaces, women are constantly calculating the risks to their safety. The "Reclaim the Night" movement is a call to dismantle the structures that allow such violence to persist and to demand that women be able to move through the world without

This case also underlines the urgent need for systemic change. It is not enough to express outrage after the fact. There must be proactive measures to protect women, including better security in workplaces, stricter enforcement of laws, and a cultural shift that condemns violence against women unequivocally. The medical community's response, with strikes and calls for justice, is a testament to the widespread demand for accountability. In a society that often fails to protect its most vulnerable, this case serves as a stark reminder that women's safety is not just a women's issue—it is a human issue. We must all work together to ensure that no woman, regardless of her religion, age, or profession, ever has to face what this young doctor endured. The time for change is now, and it must be comprehensive, swift, and unwavering.

Lavisha Sharma **Assistant Professor**

Women's safety remains a critical issue in today's society, despite advancements in gender equality. With the rise of digital platforms and social media, women face new challenges, including cyber harassment and online abuse. This adds to existing threats like physical violence, sexual harassment, and domestic abuse.

Education and awareness are vital in addressing these challenges. Teaching both men and women about consent, respect, and boundaries can help foster a culture of safety. Moreover, stronger legal frameworks and swift justice are necessary to deter perpetrators and ensure women feel protected. Technological innovations, such as safety apps and GPS tracking, are empowering women to take charge of their safety. However, these tools must be accompanied by societal change. Communities need to actively participate in making public spaces safer for women, challenging sexist attitudes, and supporting survivors of violence.Empowering women economically and socially is another essential step. When women have the resources and confidence to stand up for themselves, they are less vulnerable to exploitation and abuse.

In today's world, ensuring women's safety requires collective action from individuals, communities, and governments. It's not just a women's issue, it's a societal responsibility.

> Neha Shekhawat Assistant Professor

A Movie that Teaches Man How to Act

Indian Cinema plays a significant role in shaping societal norms and stereotypes, influencing the way people perceive an ideal man, woman, family, and society as a whole. While female portrayals in movies have been a topic of discussion for quite some time, not much attention has been given to the portrayal of men, particularly as fathers and single parents.

In mainstream Indian cinema, the portrayal of often oscillates between two extremes – the overprotective, almost unrealistically perfect father and the careless, even adulterous However, these

capture the complexities and nuances of real-life fatherhood. Very few movies have delved into the intricacies of portraying strong male characters in the role of a father or a single parent.

It's worth noting that the portrayal of fatherhood in tional representations, a Indian cinema has transformed in recent years. While some films like "Dil Hai ki Manta Nahi," "Jo Jeeta Vahi Sikandar," "Kuch Kuch Hota Hai," "Piku," "Jawani Janeman," and "Angrezi Medium" have depicted single fathers raising their children with immense love and care, others have highlighted the

of fatherhood. For instance, "Jawani Janeman" presents a more realistic portrayal of a flawed father-daughter relationship, where the father initially denies accepting his illegitimate daughter.

Amidst these conven-Telugu film, "Maharaja," has emerged as a game-changer in redefining the role of a man, particularly as a father. The protagonist, Maharaja, runs a salon and is a single father to his daughter. What sets this film apart is its portrayal of Maharaja bringing up a criminal's daughter as his own, seeking revenge against her rapists, and deal-

extreme depictions fail to challenges and imperfections ing with the trauma. The film advocates for men Through this unconventional storyline, the film challenges societal norms and conveys the message that men are not devoid of emotions, empathy, and nurturing instincts. Maharaja's character emphasizes that men are capable of providing love and care, akin to a mother, shattering the stereotype of the stoic, emotionally distant father figure.

> This film gains added significance in the wake of the recent Bengal Doctor rape case, prompting a pubwomen and children and rekindling the debate about the role of men in society.

to not be viewed solely as potential abusers exploiters but as nurturers and protectors. It underscores the idea that men play a crucial role in shaping the safety and wellbeing of families and society at large. The narrative of "Maharaja" presents a compelling vision of a man's capacity to extend care, not just to his own family, but also to others, thereby envisaging a society where men actively contribute to creating a safer and more lic discourse on the safety of nurturing environment for

Sumitra Dahiya **Assistant Professor**

बस अब और नहीं... छात्राओं के नारी सुरक्षा पर स्वाल

आज के युग जब भारत अमृत काल मना रहा हैं या अमत काल में जीवन व्यतीत कर रहा हैं वही दूसरी तरफ बेटियों से समानता व स्वतंत्रता का अधिकार उनसे छीना जा रहा हैं अप्रत्यक्ष रूप् से भारत को तबाह करने के लिए पाकिस्तान या बाग्लादेशी कटटरपंथियों की जरूरत नही हैं जैसी घटनाएं भारत में आज बेटियों के साथ हो रही हैं जैसे (कोलकता, रोहतक, सदलापुर) वही काफी हद तक सिद्ध हो रही हैं ऐसी घटनाओं को सुनकर हमारे माता-पिता या अभिभावक गहन चितंन में हैं कि उनकी बेटियां सुरक्षित हैं या नहीं ऐसी घटनाओं को होने से रोकना होगा, उनकी सजा का दायरा बढ़ाना होगा। एक बेटी, बहन या कहें कि एक डरी सहमी लडकी होने के नाते मेरी ये गुंजारिश है श्री प्रधानमंत्री मोदी जी से यह सही व्यक्त हैं दोषियो को ऐसी सजा देकर की दोबारा ऐसा सोचने वालो की भी रूंह काप जाए, क्योंकि कोलकाता कांड की चर्चा सारे शहर में और हर गांव में हैं जब ऐसे

अपराधी को सबके सामने दर्द भरी मौत उसको दी जाएं। आज हम एक और रेप का इंतजार नहीं कर सकते। हमें आपसे आशा हैं आप जरूर जो शक्तियां हमारे वोट ने आपको दी हैं जो हमारे विश्वास ने आपको दी हैं आप उनका प्रयोग कर इस देश की प्रत्येक बेटी, बहन और माँ को इंसाफ देंगे और हमारे समानता एवं स्वतंत्रता का अधिकार हमें दोबारा लौटाएगें।

...मानसी दलाल,बीकॉम

तृतीय वर्ष

आए दिन जहां रोज कुछ घटनांए देखने को मिल रही हैं भारत जहां एक स्वतंत्र विकसित देश बनने की ओर बढ रहा हैं वहां रोज एक ऐसी घटनाएं देखने को मिलती हैं कि हमारा भारत. भारत के ही लोगो का गुलाम बनता जा रहा हैं जिस तरह महिलाओं के साथ जो दुष्कर्म देखने को मिलता हैं जैसे कोलकाता, रोहतक, गाजियाबाद आदि जगहो पर जो अत्याचार हो रहें इसका जिम्मेदार हमारा समाज हैं क्योंकि माननीय

प्रधानमंत्री जी जो भारत के प्रत्येक नागरिक को स्वत्रंत चाहते हैं उनके यह आदेश समाज के आखिरी पहलु तक पहंचने में पहूंचने

असमर्थे हैं।

भारत में एक

मालूम होने के बावजूद भी उन्हें सज़ा नही दी जाती, उनके गनाहों के लिए उन्हें उसी क्षण मौत के घाट उतारा जाए ताँकि कोई भी मुजरिम इस तरह की हरकत करने से पहले सोचे समझे। अब भी बहुत सी ऐसी घटनाएं होती है जो कभी पुलिस या लोगो तक नहीं पहुंच पाती हैं। जो घर की चार दीवारो में छुप कर रह जाती हैं। लेकिन इसका जिम्मेदार राजनीति और पुलिस

हैं क्योंकि इनका सहारा लेकर ऐसे अपराध से तुरंत बच जाते हैं। राजनीति से जुड़े समाज के लोग ही समाज को दबाकर अपने गुनाहों को करके उनसे बचने में सक्ष्म हो जाते हैं महिलाओं के साथ हो रही घटनाओं की बहुत सी खबरे आ रही हैं परन्तु इनके अपराधियों को संजा देकर गुनाह करने से नहीं रोका जा सकता, वह क्या इस बात से वाकिफ नही है कि यह गुनाह उसे किस मोड़ पर ले जा रहा है। अपितु सजा उन लोगो को मिलनी चाहिए जो इनके सहयोगी हैं यह सहयोगी पुलिस और राजनीति हैं। यदि पुलिस और राजनीति अपने अपने कार्य को एकता पूर्वक करती हैं किसी गुन्हेगार की सहयोगी नहीं बनती हैं तो समाज में ऐसे गुनाहो को रोका जा सकता हैं और जल्द हम हमारे समाज की बेटियों बहनों को न्याय दिलाने मेंभारती,बीकॉम तृतीय वर्ष सक्षम रहेगें।

Do women really feel safe in India?

With the rising number of rape cases being registered in India on a daily basis, the question as to the safety of women in India is not relevant at all. In India, not a single day horses without hearing a case at all about the rape of a woman. India is a country of trillions out of which 48% are women but it is still unsafe for the women. According to the National Crime Records Bureau (NCRB) 2018 a total of 33356 rape cases were reported in India out of which were held to be appropriate. With this number of cases of almost brutality the question again bolls down to whether India is safe for women.

.....Sneha, B. com. IInd

लड़की का डुर

ठीक करती थी वो समाज को चाहे दिन हो या रात हो.. पायल की कलम आज इतना ही लिखेगी डॉ. दीदी के साथ इन्साफ हो आग उठी है अंगारे दहके हैं ,आज चारों तरफ ,काट दो उंगलियां जो उठे इज्जत तार करने को.. मत पूछो मुझसे वह बेटी किसकी थी बस तुम तैयार रहो उन नामदीं के टुकड़े हजार करने को.. छोटी-सी रूह हर रोज कुचली जाती हैं,नोच लो वो गंदी नजरें जो उठे गंदे वार करने को.. नहीं थमती यह दास्तान इस दुनिया में,और बचा

ही क्या है दरिंदगी की हद पार करने को.. अंधेरे में खो गई है इंसानियत अब हमारे पास बचा ही क्या है खोने को.. इंसाफ-इंसाफ चिल्लाते-चिल्लाते गला सूख चुका है अब बचा ही क्या है कहने को.. लगता है मुझे सुनने वाला अखबार भी मर गया है अब नहीं है और शब्द मेरे पास लिखने को.. पायल कौशिक

ये दुनिया इतनी कब?

ये दुनिया इतनी कब से बदल गई की, लड़िकया घर से निकल नहीं पा रही है। ये लोग इतने कैसे बदल गए की जानवर से भी ज्यादा खूंखार होते जा रहे है। ये दुनिया की रीत इतनी कैसे बदल गई की, लड़की के साथ गलत होने पर भी उसे ही दोषी ठहरा रहे है । ये नागरिक इतने कैसे बदल गए की पहले अस्त्र-शास्त्र उठाने वाले हाथ मोमबत्तियां उठा रहे है। ये लोगो की नजरे इतनी कैसे बदल गई की अब इंसान का मन ना देखकर उसका तन देखे जा रहे है। ये लोगो की नियत इतनी कैसे खराब हो गई कि अब ये दिरंदगी बड़ो से बच्चो तक आ रही हैं। ये तुच्छ प्राणी के तेवर कैसे बदल गए है की अब ये अपने आप को देवता से भी महान बता रहे है।।

...महक, बीएससी प्रथम वर्ष

कोलकाता हत्याकांड

हर जगह औरत की एक सी कहानी है, उन आंखों को नोच क्यों नहीं लिया जाता जिनके पीछे छिपी हेवानी है।

> बेटियों को पढाओ, बेटियों को बचाओ। बेटिया तो पढ भी गई, आगे बढ भी गई। पर अफसोस वो बच नहीं पाई. दरिंदों की दरिंदगी से समाज की शर्मिंदगी से

बदतर तरीके से एक निर्दोष की हत्या कर दी गई. व्यक्त भी ना की जा सके इतनी पीड़ा उसने सही। रोम रोम तड़पा होगा कितनी देर तक रही होगी चिल्लाई, दिरिंदे की एक बार भी दया न आई। हैवान का हिसाब पूरा बस उसे मौत की सजा सुनाई।

उसकी मौत हजारों के मरे सपने वापस नहीं कर

सजा अगर हिसाब वाली होती तो हर रोज कोई नई निर्भया न मरती

न जाने किस नाली में ये कीड़े पलते है. हर गली, सड़क, मुहल्ले में सीना तन के चिलते है बेटियों को पढ़ाने में ध्यान यूं गया कि बेटों को पढ़ना

सोचा भी ना जा सके ऐसे ऐसे जुल्म दिरंदो ने है किए।

अपनी रक्षा के लिए खुद हथियार उठाने होंगे, अपने अधिकारों की खातिर कदम बढ़ाने होंगे। बस आखिर में एक सवाल क्यों एक लड़की को हर चीज मागनी पड़ती है? हर चीज की इजाजत, अपने अधिकार, और आखिर में न्याय। अनु सैन, बी.ए. द्वितिय वर्ष

मैंने सबको बचाया पर मुझे किसी ने नहीं बचाया

कोलकाता में एक महिला डॉक्टर रेप मर्डर केस सामने आया है। जो महिलाओं की सुरक्षा के बारे में चिंता जताता है। यह सब केस इसलिए हो रहे हैं क्योंकि आजकल लोग अश्लील वेबसाइट तक आसानी से पहुंच पा रहे हैं। यह कंटेंट इतना आसानी से उपलब्ध है कि कोई बच्चा भी आसानी से इस तक पहुंच सकता है। इन पर बैन होना चाहिए और महिला सुरक्षा के लिए कुछ दूरी पर हर जगह पुलिस थाना होना चाहिए।हिमानी, बी.एस.सी प्रथम वर्ष

शीर्षक-बेडियों में जकडी बेटियां

दम्भ,ईर्ष्या,घुटन को बढ़ाकर जिंदगी में आप ही बताएं कितनों के घर घाले हैं। बेटी को श्रद्धा, द्या, ममता सिखाने वाले पाश्र्विक वृतियों के हो गए हवाले हैं। कविता ये चीख -चीख कर कहेगी क्योंकि चीखों पर बेटियों के डाले गए ताले हैं। मानव को देवता बनाने का करा के बोध पशुता के आपने रिकॉर्ड तोड़ डाले हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूंगी कि आप अपनी बेटियों को तो समझती हैं परंतु अपने बेटों को भी सिखाये की बाहर जाकर किसी के साथ भी गलत कार्य ना करें बल्कि इस बात का भी ध्यान रखना की बहन बेटियां तुम्हारे घर पर भी हैं। ...दीक्षा रानी, बी.एस.सी प्रथम वर्ष

भूलाए नहीं भूलते हादसे

अगस्त के महीने में ऐसे बहुत से हादसे हुए तो आश्चर्यचिकत करने वाले थे। रेप। बलात्कार जैसे अपराध इस महीने में बहुत से सुनने को मिले और ऐसे भी बहुत हादसे हैं जो सामने आते ही नही हैं। इस समस्या के बढ़ते प्रकोप से महिलाओं की सुरक्षा और भी जरूरी हो

ऐसे ही हादसों में से एक था 'कोलकाता का केस' जिसमें एक महिला डॉक्टर के साथ इतना बुरा व्यवहार किया गया कि लिखते हुए भ्ज्ञी हाथ काँप रहे हैं। जिस तरीके से रेप के केस बढ़ते जा रहे हैं महिलाओ की सुरक्षा करना और गंभीर होता जा रहा है। अगर ऐसे ही केस बढ़ते गए और इस घटना को करने वाले आरोपी तो खुलेआम घुम रहे है। कानूनी प्रक्रिया तो ऐसी हो गई है कि कोई असर ही ना हो रहा हो। ऐसी रूह को डरा देने वाली घटनाएँ अगर होती रही तो ऐसे में लड़िकयाँ सुरक्षित तो हैं नहीं। कोई लड़की कामयाब इसलिए नहीं होना चाहती कि उसके साथ ये सब हो ना जाने कितने केस बाहर ही नहीं आते और तो और शादी के बाद भी जोर जबरदस्ती का सामना करती है। ऐसे कानून का क्या करें जिसमें बस मुकदमा चलता रहता है और फांसी दी भी जाती है तो भी कोई खेद नही होता होगा। इन आरोपी को जब इन्हे खुद शर्म नहीं आती तो उनको सजा देने में हमें

न्यायाधीश वर्मा कमेटी का फैसला भले ही यह था कि अगर आरोपी को सीधे फांसी दे दी जाएगी तो ये आरोपी कम नहीं होने वाले। अगर दूसरे देशों को देखा जाए तो वहां की कानून व्यवस्था अच्छी हैं इस मामले में तो सऊदी अरब में तो सिर ही काट दिया जाता है। चीन में तो गुप्त अंग तक भी, दक्षिण कोरिया में सुरक्षा बल द्वारा गोली मरवा दी जाती हैं। अगर भारत की बात आती है तो कहां है सुरक्षा जवाब दीजिए। गुजरात में एक शादीशुदा महिला का गैंगरेप हो गया था। जेल से निकलकर कैदी ऐसे खुश हो रहे थे, जब पैरोल पर आए, जैसे कोई बहुत गर्व का काम किया हो

उन लोगों का माफी देना तो गलती होगी। इनको शर्मशार करना जरूरी है। ऐस चलते आ रहे तरीके का बदलना होगा। रेप के केस में तो यहां अतिआवश्यक हैं इस समाज में योगदान देने वाली आधी आबादी की बात है। सबका साथ सबका विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक ऐसे दरिंदों को तड़पा-तड़पा के ना मारा जाए कि इनकी भी रूह भी कांप जाए। फांसी देनी हो तो बहुत सारे लोगो के सामने दी जाए और इनको इनके काम के लिए सम्मानित किया जाए। इससे भी बुरी सजा इन्हें बिना कपड़ों के भरी सड़को पर घुमाया जाए ताकि इन्हें खुद भी शर्म आए और कोई ऐसा घिनौना काम करने की सोचे भी नही। ...**कोमल**,बीकॉम तृतीय वर्ष

प्रकृति से केवल लेना ही उचित नहीं अपितु उसे देना भी आवश्यक है। आज बढ़ते प्रदूषण के कारण मनुष्य जीवन न केवल अस्त व्यस्त हो गया है, अपितु जीवन निर्वाह करना भी मुश्किल हो गया है। यह उद्धगार





ली कि वह समुदाय ,परिवार, मित्र को नशे से दूर रखेंगी ओर स्वयं भी दूर रहेगी। उन्होंने रैली के माध्यम से छात्राओं को जागरुक भी किया कि वह समाज को नशा मुक्त करने में अपनी अहम भूमिका निभाए। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल में कहां नशा न करता है अपितु उससे जुड़े परिवार, समाज व देश को भी बर्बाद करता है। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट ने भी स्टेडियम में लघु नाटिका की प्रस्तुति के माध्यम से जनमानस को नशे से दूर रहने नशा मुक्ति पर स्लोगन लिखे और शपथ की प्रेरणा दी।

महाविद्याल्य परिसर में पौधारोपण किया हर्षोल्लास से मनाथा शिक्षक दिवस, अंतिम वर्ष की छात्राओं ने निमाया प्राध्यापिकाओं का किरदार



आदर्श महिला महाविद्यालय में शिक्षक दिवस बडे ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्नातक व स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष केवल व्यक्तिगत तौर पर स्वयं को बर्बाद की छात्राओं ने प्रातःकाल से प्राध्यापिकाओं का किरदार निभाते हुए कक्षाएं ली। छात्राओं ने स्वयं महाविद्यालय में पूर्ण अनुशासन बनाया। तदोपरांत सभागार में छात्राओं ने समूह नृत्य, कविता गायन, गीत गायन, नाट्य कला, की प्रस्तुतियों द्वारा सभी

प्राध्यापिकाओं को भाव विभोर कर दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मां शारदे के चरणों में दीप प्रज्वलित एवं पुष्पांजलि अर्पित कर हुआ। इस अवसर पर महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए कहा कि एक शिक्षक अपने जीवन के अंत तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता हैं वह अपने शिष्यों का हाथ पकडकर अंधकार से प्रकाश की और ले जाता हैं। उन्होनें समस्त प्राध्यापिकाएं उपस्थित रही।

विधार्थियों में संस्कारो का निर्माण करता हैं वह उन्हें सही गलत का बोध कराता हैं। उनके गुणो को निखारता हैं और उनकी राह को आसान बनाता हैं। इस अवसर पर बी.ए अंतिम वर्ष की छात्रा स्नेहा ने प्राचार्या को उनका पोट्रेट भेट किया। कार्यक्रम में संयोजिका डॉ. गायत्री बंसल, सह-संयोजिका बबीता चौधरी व

'How to write a research paper'



A talk was organised by Research and development cell on "How to write a research paper" under the guidance of Principal Dr. Alka Mittal. The resource person was Prof. Sunil Kumar Gupta(A renowned academician and expert in the field of management and distance education). The idea of this talk was to enhance the knowledge of research work for PG students as well as staff.

Our esteemed speaker

shared valuable insights and practical tips like selecting a research topic and conducting literature review, best practices for data collection and analysis on crafting a well structured and well written research paper.

Our students found the session informative and engaging and we are grateful for the speaker's expertise and enthusiasm. We look forward to hosting more such lectures in the future.

संस्कृत दिवस पर कार्यक्रम ने शिव ताण्डव स्तोत्र से सारा वातावरण शिवमय बना



संस्कृत विभाग की ओर से (विश्व संस्कृत दिवस, श्रावण पूर्णिमा, 19/08/2024) के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यऋम ÷संस्कृत पर्व÷ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य संस्कृत भाषा और संस्कृति के प्रति छात्रों में जागरूकता बढाना था। प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यऋम की अध्यक्षता डॉ. सुमन ने की। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्या महोदया द्वारा मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात् छात्राओं ने गीता श्लोक, शिव तांडव, रुद्राष्ट्रकम, विष्णु स्तुति, अग्नि मंत्र, दुर्गा स्तुति, नीति श्लोकों का उच्चारण कर सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया। कुमारी चंचल ने हास्य-कला से श्रोताओं को खुब हंसाया। कुमारी ट्विंकल ने अपनी प्रस्तुति ÷भारतम् भारतम्÷ संस्कृत गीत द्वारा भारत की महिमा को गाया। कुमारी संजना दिया। कुमारी प्रीति ने संस्कृत भाषा के महत्व पर अपनी कविता प्रस्तुत कर संस्कृत को अपने जीवन का अंग बनाने को कहा । कुमारी सुहाना, मोनिका और रजनी ने अग्नि सूक्त के मंत्रों के उच्चारण से सारा वातावरण वैदिकमय बना दिया। कुमारी मुस्कान द्वारा प्रस्तुत दुर्गा स्तुति ने छात्राओं में सकारात्मक मनोवृत्ति और आत्मविश्वास को प्रेरित किया, जिससे उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक योगदान हुआ। संस्कृत भाषा में स्तोत्र, गीत, हास्य-व्यंग्य, कविता, भाषण इत्यादि की शानदार प्रस्तुति से सारा वातावरण संस्कृतमय हो गया।

कार्यऋम को संबोधित करते हुए, प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने कहा कि संस्कृत भाषा न केवल भारतीय संस्कृति की धरोहर है, बल्कि विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। संस्कृत भाषा वर्तमान समय में कंप्यूटर की भाषा भी बन चुकी है। इस पर नासा द्वारा रिसर्च भी की जा रही है। उन्होंने छात्राओं को संस्कृत भाषा के अध्ययन के लिए प्रेरित किया तथा इस तरह के कार्यक्रमों में सिक्रय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए विश्व संस्कृत दिवस की बधाई भी दी।

इसके बाद कार्यक्रम की संयोजिका, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर स्टाफ के अन्य सदस्य श्रीमती कविता भारद्वाज, डॉ. शकुंतला, कुमारी रिंकू, कुमारी नेहा इत्यादि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ द्वारा किया गया।

'नेशनल स्पेस डे' पर कार्यकम आयोजित



आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी के भौतिकी विभाग एवं एन.सी.सी सेल के संयक्त तत्वाधान में दिनांक 23 अगस्त 2024 को 'नेशनल स्पेस डे' के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यऋम का आयोजन किया गया। कार्यऋम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल के दिशा निर्देशन में किया गया। 'चंद्रयान अभियान -3' से संबंधित व्यक्त किए।

लघ फिल्म के माध्यम से 'स्पेस डे' के महत्व को समझाया गया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने अपने विचार विषय अनुरूप साझा किए। भौतिकी विभाग के सभी सदस्य सिक्रय रूप से कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान विज्ञान विभाग समन्वयिका डॉ. निशा रानी एवं एन.सी.सी कार्यऋम अधिकारी कार्यऋम के दौरान छात्राओं को डॉ. रिंकू अग्रवाल ने अपने विचार

Two days Baking Workshop एक पेड़ माँ के नाम योजना



Two day Baking workshop for students was organized by Department of Home Science from 28th August, 2024 to 29th August, 2024 by Miss Devyani Goyal. The workshop was organized and inaugurated under the able guidance of Principal, Dr. Alka Mittal. In his inaugural speech, Dr. Alka Mittal acknowledged that baking is a skill which is in great demand in the contemporary scenario. This workshop was organized under the guidance of Head of Department, Mrs. Sangeeta Manrow. Miss Devyani taught the skills and techniques of baking including how to make cake with icing, bajra cookies and other baked goods. This workshop also workshop.

tips and tricks to make food that tastes better. On first session, 50 girl students present in this workshop took advantage of the workshop. The recipe was given to them along with a demonstration of the tools required, icing with nozzles and the variety of icing and layering in which the students had a hands-on experience. In the second session, taught the students naan khatai, cake construction, soaking, layering, coating and finishing cakes with frostings, making flowers using fondant etc. The two day workshop was concluded with a vote of thanks by Vice Principal Dr. Aparna Batra. Dr. Aparna Batra motivated the students and made them aware about different avenues opened for the students like making blogs, videos etc. and appreciated the faculty for this workshop. Assistant Professor of Home Science, Dr. Sunanda and Dr. Shalini contributed in this

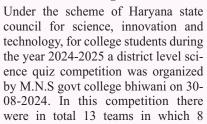
help the students learn different

के तहत लगाए १०० पौधे



एक पेड माँ के नाम योजना के अंतर्गत, वन विभाग द्वारा आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी को 100 पौधे उपलब्ध कराए गए। 14 अगस्त 2024 को इस वृक्षारोपण अभियान का विधिवत शुभारंभ माननीय अतिथियों द्वारा किया गया। यह आयोजन महाविद्यालय परिसर में 100 पेड लगाने के उद्देश्य से शरू किया गया, जिसका उद्देश्य महाविद्यालय में हरियाली और स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करना है। इस अवसर पर नेहा भगासरा (आईआरएस), डॉ. दीप्ति धर्माणी (कुलपति, सीबीएलयू), डॉ. अलका मित्तल (प्राचार्या, एएमएमबी) और अन्य प्रबंधन सदस्यों ने अपने कर-कमलों से एक-एक पौधा लगाया। कार्यक्रम में छात्राओं, स्टाफ सदस्यों और कर्मचारियों ने पौधारोपण को सफल बनाने में उत्साही भागीदारी दिखाई।

Simran, Divya, Sneh was selected for zonal level Competition.



teams qualified screening test and out of these, 5 best teams were qualified for zonal level quiz competition. From adarsh mahila mahavidyalaya two teams participated in this quiz. Out of which, our 1 Team(Simran, Divya, Sneh) was selected for zonal level Competition.



रोशनी यहां है: जाने कल्पना सरोज की सफलता की कहानी

कमानी ट्यूब्स की मालिकन कल्पना खोला। इसी दौरान उन्हें पाता चला कि सरोज कभी झोपडपट्टी में रहती थीं। घरेलू हिंसा की शिकार हुई, आत्महत्या की कोशिश भी की, फिर अपने पैरों पर उठ खडी हुई। अपनी मेहनत और लगन के दम पर बंद पड़ी कंपनी को करोड़ों रुपये के मुनाफे वाला संगठन बनाया... मजदूरी की, घरों में लगाया झाडू-पोंछा, आज हैं नौ सौ करोड़ की मालकिन

विदर्भ से एक गरीब दलित परिवार में जन्मी कल्पना सरोज की बचपन में सामाजिक प्रथाओं और कुरीतियों के कारण अन्याय सहना पड़ा। एक समय था, जब वह गोबर के उपले बनाकर बेचा करती थीं। उससे मिलने वाले थोड़े-बहुत पैसों से बड़ी मुश्किल से घर चल पाता था। महज दस वर्ष की उम्र में उनका विवाह उनसे उम्र में 10 साल बड़े शख्स से कर दिया गया। शादी के बाद कल्पना विदर्भ से मुंबई की झोपडपे ट्टी में आ गई। एक बहुत ही होनहार और अध्ययनशील बच्यों होने के बावजूद शादी के बाद वह अपनी पढाई को आगे नहीं बडा पाई। ससुराल में घरेलू हिंसा का शिकार भी होना पड़ा। लेकिन इन सबके बावजूद उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई और आज असाल जिंदगी की श्स्लमडॉग मिलियनेगर कही जाती हैं। इसके अलावा उन्हें वर्ष 2013 में शपद्म श्रीश् जैसे प्रतिष्ठित्त सम्मान से भी नवाजा गया है और कोई बैंकिंग बैकधाउंड न होने के चावजूद सरकार ने उन्हें भारतीय महिला बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में शामिल किया था। आज, सरोज की कुल संपत्ति लगभग 900 करोड़ रुपये है। उनकी प्रेरणादायक यात्रा लाखों महिलाओं के लिए आशा की किरण है। वर्षों से बंद पड़ी कंपनी में फूंकी

22 वर्ष की उम्र में कल्पना ने अपने बचाए हुए पैसों से अपने बिजनेस को आगे बढाने का सोचा। उनहोंने एक फर्नीचर स्टोर खोला। इसके बाद कल्पना ने स्टील फर्नीचर के एक व्यापारी से विवाह कर लिया उनके जीवन में सबकुछ अच्छा चल रहा था, तभी वर्ष 1989 में उनके पित की मौत हो गई। उसके बाद उन्होंने एक ब्यूटी पार्लर भी 17 साल से बंद एडी कमानी ट्यूब्स को ट्यूब्स को सुप्रीम कोर्ट ने फिर रसे शुरू करने का आदेश दिया है। बस फिर क्या था, कल्पना ने इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाते हुए 1988 से बंद पडी कमानी ट्यूब्स की कमान अपने हांथों में लेकर उसमें जान फूंक दी। हालांकि कई चुनौतियां सामने आई, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अपनी मेहनत के दम पर उन्होंने कमानी ट्यूम्स को न सिर्फ आगे बढाया कि करोड़ों रुपये की फायदे वाली



कंपनी भी बना दिया। घरों में किया झाडू-पोछा, खुदक्शी की कोशिश की

बारह साल की उम्र में ही उन्हें घर की सफाई, खाना बनाना और झाडू-पोछा जैसे काम करने पड़े। परिस्थितियों से परेशान होकर वे एक दिन किसी तरह जान बचाकर ससुराल से भागकर घर आ गई।लेकिन, पंचायत ने कल्पना के ससुराल छोड़ने की सजा, कल्पना और उनके परिवार को दी और उनके परिवार का हुका पानी बंद कर दिया। इसके लिए कल्पना ने खुद को जिम्मेदार माना और खुदकुशी करने की कोशिश की, लेकिन एक महिला ने उन्हें बचा लिया।

जीवन की नई शुरुआत

चौलह साल की उम्र में कल्पना ने एक नर आत्मविश्वास और हौसले के साथ मुंबई लौटने का फैसला किया। किसी जान-पहचान वाले ने उनकी नौकरी एक गारमेंट कंपनी में लगवा दी। वहां उन्हें रोज दो रुपये की मजदूरी मिलती थी। उन्होंने काम को समझने की कोशिश की। वह समझ गई कि गारमेंट सेक्टर में बहुत काम है। इसलिए कल्पन्ना ने खुद >> विश्वास वो शक्ति है, जिससे उजड़ी का काम शुरू करने का फैसला किया। हुई दुनिया को भी प्रकाशित किया जा इसके लिए उन्होंने सरकारी स्कीम का सकता है।

सहारा लिया और दलितों के लिए शुरू की गई योजना की सहायता से 50,000 रुपये का लोन लिया। इन पैसों से एक सिलाई मशीन और कुछ अन्य सामान खरीद कर एक बुटीक शॉप खोला। शॉप चल निकली तो कल्पना अपने परिवार वालों को भी पैसे भेजने लगी। उस समय उन्हें एक ब्लाउज सिलने के 10 रुपये मिलते थे। यह दिन में 17-18 घंटे काम करती और चार ब्लाउज सिलकर 40 रुपये

खुद का प्रोडक्शन हाउस भी

कल्पना ने कच्चे माल की सोर्सिंग से लेकर तैयार उत्पाद को बेचने और ग्राहक सेवा प्रदान करने के हर बारीक पहलुओं को सीखा। जल्द ही, उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार करना शुरू कर दिया और रियल एस्टेट के व्यवसाय में उतर गई। उन्होंने केएस फिल्म प्रोडक्शन के नाम से अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस भी खौला, लेकिन जिस एक चीज के लिए वह प्रसिद्ध हुई, वह थी कमानी ट्यूब्स कंपनी की संकटग्रस्त संपत्ति खरीदना और कंपनी को करोड़ों के मुनाफे में लाना। अब एक गरीब लड़की एक अमीर सीईओ बन चुकी थी। आज उनके पास कमानी ट्यूडस के अलावा कमानी स्टील्स, केएस क्रिएशंस, कल्पना बिल्डर एंड डेवलपर्स, कल्पना एसोसिएट्स जैसी कई कंपनियां है। जिसकी नेटवर्थ हजारों करोड रुपये है।

युवाओं को सीख

>> सफल होने का सबसे अच्छा तरीका कभी हार न मानना और हमेशा प्रवास करते रहना है।

>> कडी मेहनत और सकारात्मक सोच के बदौलत आप जीवन में सफलता पा सकते है।

>> विपरीत परिस्थितियों को एक चुनौती की तरह लेकर सफलता की इबारत लिखी जा सकती है।

>> एक बड़े पहाड़ पर चढ़ने के बाद ही पता चलता है कि अभी ऐसे कई पहाड चढने बाकी है।

जीवन सुधार के लिए दिनचर्या सुधारे



दिनचर्चा हम इसके बारे में बहुत कुछ सुनते और पढ़ते हैं। स्टीव जॉब्स, अर्नेस्ट हेमिंग्वे, बेंजामिन फैंकलिन जैसे सफलत लोग आदर्श दिनचर्या के उदाहरण हैं, जो हमें प्रेरित भी करते हैं। लेकिन यह प्रेरणा अक्सर क्षणिक होती है और इससे न तो हमारी दिनचर्या में सुधार आता है और न ही आदतों में। हम सुबह कभी भी उठते हैं, समय के अनुसार काम करते हैं, और नाश्ता करना या न करना हमारी इच्छा पर निर्भर करता है। इस तरह, हमारी कोई ठोस दिनचर्या होती ही नहीं। फिर भी. दिनचर्या बेहद महत्वपूर्ण है। । यह न केवल दिन को संरचना और उद्देश्य प्रदान करती है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन बनाए रखने में भी मदद करती हैं। स्थिर दिनचर्या हमें अधिक केंद्रित, उत्पादक और संतुष्ट महसूस कराती है और रोजाना के तनाव और अनिश्चितता से निपटने में सहायक होती है।

प्रातः सूर्योदय से पहले उठों

पहले सुबह उठने का एक निश्चित समय निर्धारित करें। यदि आपको सुबह ७ बजे उठना है, तो रोज इसी समय पर उठें। इसके लिए, आपको रात के सोने का समय भी तय करना होगा ताकि आप आठ घंटे की नींद पूरी कर सकें। जब आपको दिनचर्या सही समय पर शुरू होगी, तो अन्य कामों के लिए समय निकालना भी आसान हो जाएगा।

व्यायाम अवश्य करें

तन-मन को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आप

घर पर योग या व्यायाम कर रहे हैं, तो एक भी दिन इसे छोड़ना नहीं चाहिए। और अगर आप अभी तक व्यायाम नहीं करते हैं, तो इसे अपनी दिनचर्या में शामिल करना शुरू करें। अगर किसी दिन आप व्यायाम नहीं कर पाए, तो एक अच्छी सैर करें। जो लोग व्यायाम नहीं करना चाहते, उन्हें भी सैर को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए।

संतुलन में खाएँ

सुबह का नाश्ता भी महत्वपूर्ण है और इसे 9 बजे से पहले करना चाहिए, क्योंकि यह सेहत के लिए बहुत जरूरी हैं। साथ ही यह आपकी दिनचर्या को व्यवस्थित रखने में भी मदद करता है। महत्वपूर्ण काम पहले करें

कुछ काम ऐसे होते हैं जिनके लिए आपको समय निकालना पडता है। मुख्य कार्यों की दिनचर्या के साथ, उन जरूरी कामों को भी शामिल करें, जैसे सुबह अखबार या किताब के कुछ अंश पढ़ना, घर को व्यवस्थित करना, बागवानी, आदि। ऐसे कई कार्य हैं जिन्हें आप व्यवस्थित तरीके से अपनी दिनचर्या में शामिल कर सकते हैं। लेकिन ध्यान रखें कि इसमें मोबाइल चलाना, टीवी देखना जैसे काम शामिल

दिनचर्चा से अनुशसित जीवन जिएँ दिनचर्या के अनुसार छोटे-बड़े सभी कामों को समय पर समाप्त करने की आदत आप स्वाभाविक रूप से विकसित कर लेते हैं, जो भविष्य में आपकी सफलता में योगदान देती है।

After years of marriage, Abhishek Bachchan and Aishwarya Rai Bachchan are making headlines as the couple arrived separately at Anant Radhika Ambani and Merchant's wedding. Earlier, there were reports regarding the separation of Abhishek and Aishwarya.

What Is Grey Divorce?

Grey Divorce is a term that describes divorces that happen later in life, generally after the 50s, after the couples have spent years together. People who separate after Expectancy:The spending such a long time together are called Silver splitters and divorcing later in life can cause financial difficulties, among many other complications.

Grey divorces are increasing rapidly. According to Pew

of all divorce cases in the United States in the past two decades involved individuals aged 50 or older. The rate of grey divorces doubled since 1990 and this number tripled for those over the age of 65.

Why are people separating after decades of marriage? Retirement- Post-retirement, the couple starts spending more time together and consequently faces differences in how they want to live their retirement age.

Increased Life life expectancy rate is higher and people are living longer, hence couples find themselves growing apart over time and seek personal fulfilment in new ways.

Financial **Independence:** Women are more independent Research Center, 40 per cent today as they have their own



careers and all the financial resources, which provide them the means to leave an unsatisfactory marriage.

Changing Social Attitudes-Society is now accepting the concept of divorce, which is making it easier for older adults to consider this option.

Possible implications of grey divorce

The decision to separate from your partner in the later years of life comes with its challenges and things that need to be considered. Here are some could lead to changes in social possible implications of grey divorce:

Financial Impact: Dividing assets, specifically retirement funds could be a complex thing and may impact

the financial security of both parties. It also considers Alimony and spousal support. Healthcare- Older adults have great healthcare needs and divorce can complicate insurance coverage and the division of healthcare responsibilities.

Emotional Impact- Divorce at any age is emotionally problematic which is hard for older adults who might have been together for decades. The effect on adult children is also significant as they may feel a sense of family stability is lost.

Social Changes- Divorce protected.

circles, as friends and family may start taking sides or feel awkward around newly single individuals. Resultantly, new single might start feeling loneliness and need to build a new social network

Lifestyle Adjustments-Changes in living arrangements, like leaving a family home could be stressful and would take some time to adjust. Hence managing a single life in older age is complicated.

Considerations: Legal Divorce in later life could be exhausting as the couple has to undergo several legal aspects like updating wills, beneficial designations, and power of attorney with due respect to one's wishes and making sure assets are being







जो विद्यार्थी में संस्कारों का निर्माण करें वही सच्चा शिक्षक



विश्व के कई देशों में शिक्षक दिवस 5 अक्टूबर को मनाया जाता है। अमेरिका में मई महीने के पहले सप्ताह में मंगलवार के दिन शिक्षक दिवस मनाया जाता है। थाईलैंड में 16 जनवरी को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। ईरान में 2 मई को लोग शिक्षक दिवस मनाते हैं। तुर्की में 24 नवंबर के दिन टीचर्स डे सेलिब्रेट किया जाता है।

बच्चों के विकास में मदद करेंगी ये बातें: बच्चों को टीचर्स डे के दिन गुरु द्रोण से लेकर डॉ, राधाकृष्णन तक हुए महान टीचर्स की कहानियों बतानी चाहिए। जिनकी कहानियां बच्चों के लिए मोटिवेशन का काम करेंगी। बच्चों में ऋएटिविटी बढ़ाने के लिए उन्हें शिक्षक दिवस के मौके पर स्कूल या कॉलेज के स्टेज पर अपने टीचर के लिए कविता या स्पीच बोलकर अपने भाव व्यक्त करने के लिए कहें। ऐसा करने से उनकी कम्युनिकेशन और प्रेजेंटेशन स्किल्स बढेगी।

बच्चे को अपने टीचर के लिए वीडियो, फोटो, थैंक्यू कार्ड या फिर हैंड मेड कार्ड बनाकर टीचर को देने के लिए कहें. ऐसा करने से बच्चे की ऋएटिविटी बढेगी।

टीचर्स की जिम्मेदारियां: पहले का समय हो या आज का मॉर्डन जमाना, गुरु की शिक्षा प के महत्व का सबसे आज का मॉर्डन जमाना, गुरु से लेकर बड़े होने तक शिक्षक हमें कई बातों का अनुभव करवाते हैं। टीचर्स नर्म रहे हो या सख्त, आपकी सक्सेसफुल लाइफ में उनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। अच्छे विचार सिखाते हैं टीचर्सः फैमिली के बाद अगर आपको कोई अच्छे बुरे की पहचान करवाता है, तो वह हैं टीचर्स। जहां टीचर्स आपको जिंदगी की अच्छी सीख देते हैं वहीं स्टूडेंट उनके सम्मान में कोई कमी नहीं छोड़ते और यही बात इनके रिश्ते को मजबृत बनाती है।

क्षमताओं को पहचानते हैं टीचर्सः

अच्छे शिक्षक आपकी क्षमताओं को पहचान कर उन्हें और भी निखारते हैं। क्लास के दौरान आपकी एक्टिविटी पर नजर रखते हुए वह यह अंदाजा लगा लेते हैं कि आपके लिए कौन-सा सब्जेक्ट सही है। जाहिर है टीचर का अनुभव आपसे ज्यादा होगा इसलिए उनकी राय जरूर जान लेनी चाहिए।

टैलेंट को निखारते हैं टीचर्स: वह टीचर ही हैं जो बच्चे के हुनर को पहचान कर उन्हें निखारते हैं। स्कूल में होने वाली एक्टिवटी के जरिए टीचर बच्चे की प्रतिभा को निखारने का काम करते हैं। एक अच्छे स्टूडेंट के नाते आपका भी यही कर्तव्य है कि आप उन्हें निराश न करें।

जिम्मेदार बनाते हैं टीचर्सः होमवर्क न करने पर आपने भी कभी न कभी डांट जरूर खाई होगी, लेकिन इसके कारण आप दोबारा अपना होमवर्क करना नहीं भूलें होंगे। उनकी यही डांट आपको धीरे-धीरे जिम्मेदार बनाती है।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस

अगस्त को दुनिया भर में मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य युवाओं के मुद्दों, उनकी आकांक्षाओं और उनकी समाज में भूमिका पर ध्यान केंद्रित करना है। यह दिन युवाओं की आवाज़ को बुलंद करने, उनकी समस्याओं को उजागर करने और उन्हें सशक्त बनाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस की स्थापना और उद्देश्य

संयुक्त राष्ट्र ने 1999 में अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस की स्थापना की, ताकि वैश्विक समुदाय युवाओं के विकास, उनकी चुनौतियों और उनके योगदान के बारे में जागरूक हो सके। इस दिन को मनाने का उद्देश्य युवाओं के सामने आने वाली सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक और चुनौतियों पर चर्चा करना और उनके समाधान के लिए वैश्विक स्तर पर प्रयास करना है।

युवा शक्ति का महत्व

युवाओं को किसी भी समाज की रीढ़ माना जाता है। वे नवाचार, ऊर्जा और उत्साह के प्रतीक होते हैं। एक राष्ट्र की प्रगति और विकास द्यंड्रहृदृदृद्य4 इस बात पर निर्भर करता है कि वहां की युवा पीढी कितनी शिक्षित, सशक्त और प्रेरित है। युवाओं में वह शक्ति और क्षमता होती है, जो समाज में परिवर्तन

चुनौतियाँ और अवसर

हालांकि, आज के युवाओं के सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। बेरोजगारी, शिक्षा का अभाव, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे, और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएं युवाओं के सामने प्रमुख चुनौतियां हैं। इसके अलावा, तकनीकी विकास और डिजिटल युग ने भी नए प्रकार की समस्याएं उत्पन्न की हैं, जैसे

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस हर साल 12 कि साइबर बुलिंग और इंटरनेट की लत। इन चुनौतियों के बावजूद, युवाओं के पास असीमित अवसर भी हैं। तकनीकी प्रगति, शिक्षा के नए माध्यम, और उद्यमिता के नए रास्ते युवाओं को आत्मनिर्भर बनने और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर प्रदान करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस का महत्व अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस का महत्व इस बात में निहित है कि यह दिन युवाओं के अधिकारों, उनकी जरूरतों और उनके सपनों को पहचानने का

> दिन है। इस दिन विभिन्न कार्यऋमों, सेमिनारों, और गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिनके माध्यम से युवाओं की आवाज् को बूलंद किया जाता है। इस दिन, वैश्विक समुदाय उन नीतियों और कार्यक्रमों पर विचार करता है, जो

युवाओं को बेहतर शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर सकें। इसके अलावा, यह दिन युवाओं को उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक करता है, ताकि वे समाज में सिऋय भागीदारी निभा सकें।

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि एक अवसर है, जब हम युवाओं के योगदान को सराहते हैं और उन्हें एक उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर करने का संकल्प लेते हैं। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि युवाओं का सशक्तिकरण और विकास समाज की समृद्धि और स्थिरता के लिए आवश्यक है। जब हम युवा पीढ़ी को सही दिशा और संसाधन प्रदान करते हैं, तो वे न केवल अपने भविष्य को बेहतर बनाते हैं, बल्कि समस्त मानवता के लिए भी प्रगति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

अगस्त क्रांतिः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और निर्णायक अध्याय

अगस्त क्रांति, जिसे भारत छोडो आंदोलन के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण और निर्णायक अध्याय है। यह आंदोलन 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी द्वारा मुंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सत्र में शुरू किया गया था। गांधीजी ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ ÷करो या मरो÷ का नारा दिया और भारतीयों से ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया।

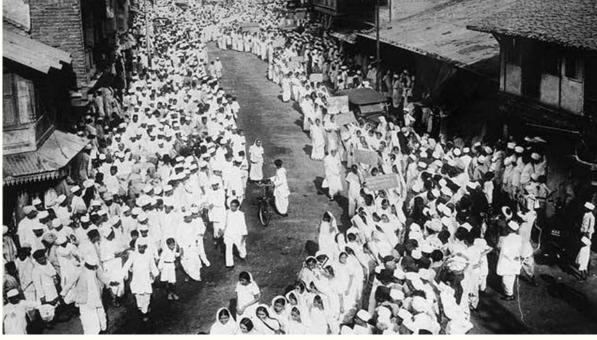
अगस्त क्रांति का पृष्ठभूमि 1940 के दशक की शुरुआत में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन की स्थिति कमजोर हो गई थी। भारतीय नेता चाहते थे कि इस स्थिति का फायदा उठाकर ब्रिटिश शासन को समाप्त किया जाए। हालांकि ब्रिटेन ने भारतीय नेताओं की मांगों को नजरअंदाज किया और भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल कर लिया। इसके चलते भारतीयों में गस्सा बढने लगा। इसी समय, महात्मा गांधी ने एक

भारत छोडो आंदोलन की घोषणा की। भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत

बड़े पैमाने पर जन आंदोलन की

आवश्यकता को महसूस किया और

8 अगस्त 1942 को, गांधीजी ने



ब्रिटिश हुकूमत को तुरंत भारत छोड़ने की मांग की। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अहिंसात्मक तरीके से आंदोलन में भाग लें और किसी भी परिस्थिति में हिंसा का सहारा न लें। उनका नारा ÷करो या मरो÷ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में गूंज उठा और लाखों भारतीयों को प्रेरित किया।

आंदोलन का प्रभाव और प्रतिक्रिया

÷भारत छोडो÷ का आह्वान किया और भारत छोडो आंदोलन की घोषणा के किया, लेकिन भारतीय जनता का

तुरंत बाद, ब्रिटिश सरकार ने गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल और कांग्रेस के अन्य शीर्ष नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इस गिरफ्तारी के बावजूद, आंदोलन ने पूरे देश में आग की तरह फैल गया। लोग सड़कों पर उतर आए, हड़तालें की गईं, और जगह-जगह प्रदर्शन हुए।

ब्रिटिश हुकूमत ने इस आंदोलन को कुचलने के लिए बल प्रयोग

उत्साह कम नहीं हुआ। गाँव-गाँव और शहर-शहर में आंदोलनकारियों ने सरकारी दफ्तरों. रेलवे स्टेशनों और संचार साधनों पर कब्जा कर लिया। कई जगहों पर हिंसक घटनाएँ भी हुईं, और कई आंदोलनकारियों को अपनी जान गंवानी पड़ी। लेकिन इस आंदोलन ने ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी और यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय अब आजादी के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

अगस्त क्रांति का ऐतिहासिक

अगस्त ऋांति का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपर्ण स्थान है। इस आंदोलन ने भारतीय जनता में स्वतंत्रता के प्रति एक अदम्य उत्साह पैदा किया और ब्रिटिश सरकार को यह अहसास हुआ कि अब भारतीयों पर राज करना आसान नहीं होगा। यद्यपि भारत को तुरंत आजादी नहीं मिली, लेकिन यह आंदोलन भारत की आजादी की दिशा में एक निर्णायक कदम साबित हुआ। इस आंदोलन के बाद, ब्रिटिश हुकूमत ने महसूस किया कि अब उनका भारत पर शासन बनाए रखना संभव नहीं है और अंततः 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

अगस्त ऋांति भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है, जिसने भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता की अदम्य ज्वाला को प्रज्वलित किया। इस आंदोलन ने यह साबित कर दिया कि जब एक राष्ट्र स्वतंत्रता के लिए एकजुट हो जाता है, तो कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती। अगस्त ऋांति न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महानता का प्रतीक है, बल्कि यह आने वाली पीढियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है।

आधुनिक समय में रक्षाबंधन



आधुनिक समय में रक्षाबंधन का स्वरूप और भी व्यापक हो गया है। यह त्योहार केवल हिंदू धर्म में ही नहीं, बल्कि अन्य धर्मों और समुदायों में भी मनाया जाता है। जहां एक तरफ यह त्यौहार भाई-बहन के रिश्ते को मजबूत करता है, वहीं दूसरी तरफ यह सामाजिक समरसता और एकता का संदेश भी देता है।

रक्षाबंधन की तैयारी और परंपराएँ: रक्षाबंधन से पहले, बहनें सुंदर राखियां खरीदती हैं या खुद बनाती हैं। इस दिन विशेष पूजा की जाती है, जिसमें बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक करती हैं, राखी बांधती हैं, और मिठाई खिलाती हैं। भाई, बदले में, अपनी बहनों को उपहार देते हैं और जीवन भर उनकी रक्षा का वचन देते हैं।

उपहारों का महत्वः रक्षाबंधन पर दिए जाने वाले उपहार का विशेष महत्व है। यह केवल एक वस्तु नहीं होती, बल्कि इसमें भाई का प्रेम और देखभाल शामिल होती है। बहनें भी अपने भाइयों के लिए खास उपहार तैयार करती हैं, जिससे उनका रिश्ता और भी प्रगाढ़ हो

संस्कार एवं संस्कृति **7** *अनुपमा यात्रा* भगवान श्रीकृष्ण का जीवन और महत्व

जन्माष्ट्रमी, जिसे कृष्ण जन्माष्ट्रमी या गोकुलाष्ट्रमी के नाम से भी जाना जाता है, हिन्दू धर्म का एक प्रमुख त्योहार है। यह भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव है, जो हिंदू पंचांग के अनुसार भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। श्रीकृष्ण को विष्णु के आठवें अवतार के रूप में पूजा जाता है, और वे अपने चमत्कारों, लीलाओं और शिक्षाओं के लिए समस्त संसार में प्रसिद्ध हैं।

श्रीकृष्ण का जन्म मथुरा नगरी में हुआ था। उनका जन्म कंस के कारागार में हुआ था, जो उनकी माता देवकी का भाई और मथुरा का ऋर शासक था। कंस ने एक आकाशवाणी सुनी थी कि देवकी का आठवां पुत्र उसका संहार करेगा, इसलिए उसने देवकी और उनके पति वसुदेव को कारागार में बंद कर दिया। लेकिन जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, तो उनकी रक्षा के लिए चमत्कारिक घटनाएं हुईं, और वसुदेव उन्हें यमुना नदी पार कर गोकुल में नंद बाबा और यशोदा के पास छोड़ आए। यहीं से कृष्ण की बाल लीलाओं का प्रारंभ

कृष्ण का जीवन धर्म, प्रेम, और सत्य की विजय का प्रतीक है। उन्होंने महाभारत के



युद्ध में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, जो जीवन की गूढतम रहस्यों को समझाता और आज भी मार्गदर्शन करता है। जन्माष्टमी की परंपराएँ और उत्सव

जन्माष्ट्रमी का त्योहार विशेष धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन मंदिरों को भव्य रूप से सजाया जाता है और भगवान श्रीकृष्ण की मूर्तियों को झूले में रखा जाता है। रात्रि 12 बजे, जब कृष्ण का जन्म हुआ था, तब विशेष पूजा अर्चना की जाती हैं। भक्त व्रत रखते हैं, कीर्तन और भजन करते हैं, और माखन-मिश्री का भोग अर्पित करते हैं, जो कृष्ण को अत्यधिक

गोकुल और वृंदावन में यह त्योहार विशेष रूप से मनाया जाता है। यहाँ श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं को नाटक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसे %रासलीला% कहा जाता है। मुंबई और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में %दही-हांडी% का आयोजन होता है, जिसमें लोग मानव पिरामिड बनाकर ऊँचाई पर टंगी मटकी को फोड़ते हैं, जो कृष्ण की माखन चोरी की लीला का प्रतीक है।

आध्यात्मिक महत्व

जन्माष्ट्रमी न केवल भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव है, बल्कि यह धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन के महत्व को भी रेखांकित करता है। इस दिन लोग भक्ति में लीन होकर अपने जीवन को श्रीकृष्ण की शिक्षाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं। गीता में दिए गए उनके उपदेश जीवन के कठिन मार्गों पर चलने के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं।

गोगा जी महाराज का जीवन और महत्व

गोगा नवमी, जिसे गोगा पंचमी या गोगा नौमी के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर भारत में विशेष रूप से राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्योहार है। यह पर्व गोगा जी महाराज, जिन्हें गोगा वीर या जाहरवीर गोगा के नाम से भी जाना जाता है, की पूजा और सम्मान के लिए मनाया जाता है। गोगा जी महाराज को सांपों के देवता के रूप में पूजा जाता है और वे हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बीच समान रूप से पूजनीय हैं।

गोगा जी महाराज का जन्म राजस्थान के ददरेवा में हुआ

था। उनकी माता का नाम बाछल देवी और पिता का नाम जेवर सिंह था। गोगा जी को चमत्कारी शक्तियों का वरदान प्राप्त था, और वे सांपों के देवता के रूप में जाने जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि वे सांपों के डसने से लोगों की रक्षा करते हैं और उनकी पूजा करने से सांपों का भय समाप्त होता है।

गोगा जी महाराज का जीवन वीरता और साहस की मिसाल है। उन्होंने समाज में धर्म और न्याय की स्थापना के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके अनयायी उन्हें वीरता और पराऋम् के प्रतीक के रूप में 🛚 मानते हैं और उनकी पूजा में विशेष आस्था रखते हैं।

गोगा नवमी का पर्व और परंपराएँ

गोगा नवमी भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को मनाई जाती है। इस दिन लोग गोगा जी महाराज की पूजा-अर्चना करते हैं और विशेष रूप से उनके मंदिरों में जाकर मन्नतें मांगते हैं। गोगा जी की मूर्ति या उनका प्रतीक स्थान, जिसे %गोगा चौक% कहा जाता है, पर दूध, लड्डू, और अन्य प्रसाद चढाए जाते हैं।

गोगा नवमी के दिन ग्रामीण इलाकों में गोगा जी की झांकियां और जुलूस निकाले जाते हैं, जिसमें लोग उनके वीरता के गीत गाते हैं और ढोल-नगाडों के साथ उत्सव मनाते हैं। इस दिन गोगा जी महाराज के घोड़े %सर्पराज%

> की विशेष पूजा की जाती है और उसे प्रसाद चढ़ाया जाता है। कई जगहों पर इस अवसर पर विशेष मेलों का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। सापों के प्रति आस्था

गोगा जी महाराज की पूजा में सांपों का विशेष स्थान है। मान्यता है कि गोगा जी महाराज के आशीर्वाद से सांपों से जुड़े भय और संकट दूर हो जाते हैं। इसी वजह से इस दिन लोग विशेष रूप से सांपों के बिलों की पूजा करते हैं और 🚩 उन पर दूध चढ़ाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग गणेश चतुर्थी को तिथि: गणेश और फूल चढ़ाना शामिल है। इसके इस दिन खेतों और घरों में सांपों को नुकसान चतुर्थी की तिथि हर साल भाद्रपद मास बाद, लोग भगवान गणेश की आरती

गणेश चतुर्थी

एकदंन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः। प्रपन्न जनपालाय, प्रणतार्ति विनाशिने ।। श्री गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं। गणपति हम सभी के जीवन में सुख, शांति एवं समृद्धि का आशीर्वाद प्रदान करें।... गणेश चतुर्थी हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण त्योहार है, जो भगवान गणेश की पूजा और उत्सव के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार भारत में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है, और लोग अपने घरों में गणेश जी की मूर्ति स्थापित करते हैं और उन्हें विभिन्न प्रकार के व्यंजन और फूल चढ़ाते हैं।

गणेश चतुर्थी का महत्वः गणेश चतुर्थी का महत्व भगवान गणेश की पूजा और उनके आशीर्वाद को प्राप्त करने में है। भगवान गणेश को विघ्नहर्ता के रूप में पूजा जाता है, जो बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं। गणेश चतुर्थी के अवसर पर, लोग भगवान गणेश से अपने जीवन में सुख-शांति और समृद्धि की कामना करते हैं।

नहीं पहुंचाते और उन्हें आदरपूर्वक सम्मान देते हैं। के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को करते हैं और उनसे आशीर्वाद लेते हैं।



मनाई जाती है। इस वर्ष, गणेश चतुर्थी 7 सितंबर को मनाई जा रही है। गणेश चतुर्थी की पूजा विधिः गणेश चतुर्थी की पूजा विधि में भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित करना, उन्हें स्नान कराना, और विभिन्न प्रकार के व्यंजन

नाग पंचमी एक महत्वपूर्ण हिन्दु त्योहार मिलता है, जहाँ जनमेजय द्वारा नाग यज्ञ है, जो विशेष रूप से भारत और नेपाल में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। यह पर्व नाग देवताओं की पूजा के लिए समर्पित है और श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। नाग पंचमी का उत्सव मुख्य रूप से सांपों की पूजा के लिए जाना जाता है, जिन्हें हिन्दू धर्म में देवताओं का रूप माना जाता है।

नाग पंचमी का उल्लेख विभिन्न पौराणिक कथाओं में मिलता है। एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान वासुकी नाग ने मंदराचल पर्वत को लपेटकर रस्सी का काम किया था, जिसके कारण देवताओं और असुरों ने समुद्र मंथन किया। इसी प्रकार, महाभारत में भी नागों का उल्लेख के माध्यम से नागों का विनाश करने का प्रयास किया गया था, लेकिन आस्तिक मुनि के हस्तक्षेप के कारण नागों का विनाश नहीं हो सका।

इसके अलावा, भगवान शिव के गले में नागों का निवास है, और वे नागों के संरक्षक माने जाते हैं। इसी तरह, भगवान विष्णु शेषनाग के ऊपर विराजमान होते हैं। नाग पंचमी पर नागों की पूजा करने से भगवान शिव और विष्णु दोनों की कृपा प्राप्त होती है।

नाग पंचमी की परंपराएँ

नाग पंचमी के दिन लोग विशेष रूप से नाग देवता की पूजा करते हैं। इस दिन कई जगहों पर नागों के चित्र या मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा की जाती है। लोग नागों के बिलों के पास जाकर दूध,



करते हैं। इसके साथ ही, नाग पंचमी के दिन लोग व्रत रखते हैं और विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लोग खेतों में जाकर नाग देवता की पूजा

फूल, अक्षत, और लड्डू आदि अर्पित करते हैं और उनकी सुरक्षा और समृद्धि की प्रार्थना करते हैं। इस दिन विशेष रूप से यह माना जाता है कि नाग देवता की पूजा से सांपों के काटने का भय दूर होता है और वे परिवार की रक्षा करते हैं।

नाग पंचमी का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

नाग पंचमी का त्योहार केवल धार्मिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसका सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। इस दिन लोग प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति अपने कर्तव्यों का भी पालन करते हैं। यह त्योहार इस बात का प्रतीक है कि हमें प्रकृति और उसके सभी जीवों के प्रति आदर और सम्मान का भाव रखना चाहिए। नाग पंचमी के दिन लोग सांपों के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं और उनके साथ सह-अस्तित्व का संदेश देते हैं। इस पर्व के माध्यम से हमें यह सीखने को मिलता है कि सभी जीव-जंतु हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनका संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है।







From the Desk of IRS Alumni

I am Neha (IRS). I did my BA from Adarsh Mahila Mahavidyalaya (Batch: 2017-20).

First of all, I'd like to express my gratitude towards our institution, our Principal Mam and all other teachers for giving me this opportunity to share my experiences with you all.

We all cherish our college life. From academic pursuits to extracurricular activities, it's a playground for exploration and growth. The opportunities our Adarsh College provides are indeed unmatched. I want to share some of my college experiences, with the hope that you might relate to some of them and get inspired by others.

When we are in college, we have a general tendency to not take every lecture seriously. I was also like you guys are now. Just finishing the homework for the sake of homework. But one day



Aparna Mam, while teaching These words striked me and I English Grammar said," You all are not taking this seri-

religiously followed every lecture and instruction of ously now but one day you'll Mam thereafter. Yes, it paid pay tremendous amounts of me off. I have qualified money to coaching just for CDS, CGL and many other learning the same grammar". such examinations but I

look at Grammar again. So, please take lectures seriouscollege notes from more than two books. Whenever I told this to anyone, I heard" Why would you put in so much effort just for college exams". I also felt at times that maybe I should have used that time to learn something else. But I can't explain how much this thing helped me in cracking UPSC on the first attempt itself. I want you to believe that your hard work will pay you, no matter when and where you put it in.

Our teachers shape our personality. For example, once I was upset for not getting full marks in a class test. Our Hindi Professor Madhu Malti Mam said," How would You be able to achieve bigger things if you kept feeling demotivated by such trivial things? I experience.

never felt the need to even know that one day you will be at such a great place where these marks would ly. Adding on, I made my never matter ". These words kept echoing in my mind to date and always helped me to look at the bigger picture.

One more thing I'd like to share with you all is the worry about the future. Yeah, we all at the college stage get worried about what the future holds for us. That's important too but we should never let this overpower us. Trust me when I say this, the future will be more beautiful than what you have thought if You give your best at everything.

I can keep going but due to want of space and time, I'll sum this up by just thanking all my respected professors and my amazing friends for making my college life an unforgettable

Answers to Your Career Questions



प्रश-1 यूपीएससी एग्जाम की तैयारी कब से शुरू करें?

उत्तर-10 + 2 या ग्रेजुएट पूरी करने के बाद 2 से 3 साल की कड़ी मेहनत से लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न-2 एग्जाम किस भाषा में

उत्तर- भाषा कोई भी हो इंग्लिश बेसिक ज्ञान में पद के अनुरूप इंग्लिश भाषा की समझ होना आवश्यक है।

प्रश्न-3 किसी भी एग्जाम में सफलता के लिए मूल मंत्र क्या है? उत्तर- स्तरीय शिक्षा की बेहतर समझ बनाकर पढ़ाई करना वह सामयिक जानकारी रखना।

प्रश्न-4 युपीएससी एग्जाम में कौन सी बुक पढ़े और बुक कहां से मिलेगी?

उत्तर- बढिया लेखक की अनेक पुस्तक बाजार में मौजूद है बशर्ते गंभीरता से नियमित अध्ययन की आवश्यकता है। आजकल ऑनलाइन ऑफलाइन बुक अवेलेबल है।



प्रश्न-5 बुक्स के अलावा और क्या

उत्तर- इंग्लिश न्यूजपेपर में जो न्यूज़ की क्वालिटी है वह हिंदी समाचार पत्र में नहीं है इसलिए दोनों की समझ आवश्यक है। प्रीवियस ईयर के पेपर हेल्पफुल होते हैं। समसामयिक जानकारी से हमेशा अपने आप को अपडेट रखें।



प्रश्न-6 एनसीईआरटी की बुक कौन सी कक्षाओं की पढ़नी चाहिए?

उत्तर- अप टू प्राइमरी क्लासेज। (6 टू 12) गहन अध्ययन करना चाहिए। कोई भी पुस्तक बार-बार पढ़े व रिवीजन करते रहना चाहिए।

प्रश्न-७ व्यक्तित्व विकास का इंटरव्यू में कैसे विकास किया जाए? उत्तर- स्कूल विद्यालय में आयोजित प्रोग्राम में रुचि अनुसार बढ़ चढ़कर भाग लेना,अपने आप पर विश्वास रखना।

प्रश्न-8 एग्जाम की तैयारी कैसे करें?

उत्तर- प्रश्नों को समय अवधि में लिखने का लगातार अभ्यास करना वह लिखावट को सुंदर बनाना। नॉलेज के साथ राइटिंग प्रैक्टिस अति आवश्यक है। शांत चित्त व मन से अपने आप पर

प्रश्न-९ कोचिंग सेंटर व पियर ग्रुप के बिना डाउट कैसे क्लियर करें?



उत्तर- विषय का गंभीरता से पठन है डाउट क्लियर करता है।

युट्यूब से सक्सेस प्रोग्राम देखकर अपने आप को मोटिवेट कर सकते हैं। प्रश्न-10 स्टूडेंट लाइफ स्ट्रेस कम करके एम पर ध्यान कैसे करें?

उत्तर - पॉजिटिव एटीट्यूड ।माता-पिता का परा सहयोग प्राप्त करना। उन्हें विश्वास दिलाना कि मैं आपको सक्सेस होकर दिखाऊंगी।



प्रश्न-11 प्रिपरेशन किस एज से स्टार्ट करें?

उत्तर- यूपीएससी हाई क्लासेस स्टार्ट अंडर 25 एज (लास्ट बीए फाइनल ईयर से) द फर्स्ट से वह लगभग रूटिंग से दो से ढाई साल में तैयारी हो सकती है। बेसिक चीज है हमारा बेसिक स्ट्रांग होना चाहिए। डायरेक्ट एम चुनो और तैयारी पर जुट जाए। फॉर्मल प्रिपरेशन-70प्रतिशत जीके इन फॉर्मल प्रिपरेशन। इंटर कॉलेज पार्टिसिपेट एंड अदर एक्टिवटीज। मदर टांग किस दिन सेलिब्रेट किया गया मदर टंग लैंग्वेज की तैयारी हर समय करनी पड़ेगी। दूसरे फील्ड से आकर दोबारा सारी तैयारी करनी पडेगी। अपना फेवरेट सब्जेक्ट लेकर चले। इंग्लिश लैंग्वेज में न्यूज् पेपर पढना स्टार्ट करें। लाइब्रेरी का गहनता से प्रयोग करें। किसी सब्जेक्ट को क्लियर करने के लिए 40 बार भी



पढ़ना पड़े तो क्लियर करें। प्रश्न- 12 युपीएससी की कौन सी

बुक पढें? उत्तर- दिल्ली में इंग्लिश मीडियम की बुक मिलेगी।

प्रश्न -13 एनसीईआरटी की तैयारी कैसे करें?

उत्तर बेस छह क्लॉस बनाना शुरू करें एनसीईआरटी छह से अबोव क्लासेस की बुक पढ़े। मॉक टेस्ट प्रैक्टिस। ग्रुप डिस्कशन।

प्रश्न- 14 यूपीएससी की जर्नी कैसे शुरू की स्ट्रैटेजी क्या रही और एम कैसे बनाया?

उत्तर- मैंने देखा कि यूपीएससी में कितना सम्मान मिलता है। यह एक सम्मान का पद है। लाल बत्ती वाली गाडी आएगी उसमें मैं बैठी होंगी। मम्मी पापा ने भी मोटिवेट किया। हिस्ट्री



पॉलिटिकल से मैंने ग्रेजुएशन की। अन्य करिकुलर एक्टिवटीज में भाग लेना भी जरूरी है। हिंदी /इंग्लिश मीडियम ऑप्शनल के लिए तैयारी की। एकेडमी ज्वाइन की। आप बेसिक से स्टार्ट कर सकते हैं,इंग्लिश न्यूज़ पेपर पढ़ सकते हैं इंग्लिश पेपर में जो क्वालिटी है वह हिंदी पेपर में नहीं होती। कांसिस्टेंसी रखोगे तो एक-दो साल में सब कुछ समझ में आने लगेगा। खुद को पर्सनलाइज करें प्रीवियस ईयर के क्रेश्चन पेपर सॉल्व करके देखें। नॉलेज के साथ-साथ राइटिंग पेपर को कैसे हैंडल करना है वह भी सीखें। अपने मन को शांत रखना सीखे। धैर्य रखें तथा अपने आप पर पूरा विश्वास रखें। अप एंड डाउन जीवन में आते रहेंगे उनसे मुकाबला करना आना चाहिए।



स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा हरियाणा की आवाज प्रिंटर्स,

भिवानी से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है।

Title-Code:- HARBIL01906

Gmail:



प्रबंध सम्पादकः डॉ. अलका मित्तल

